

रविवार 14 अप्रैल, 2019

विषय — क्या पाप, बीमारी और मृत्यु वास्तविक हैं?

स्वर्ण पाठ: भजन संहिता 107: 20

---

“वह अपने वचन के द्वारा उन को चंगा करता और जिस गड़हे में वे पड़े हैं, उससे निकालता है।”

---

उत्तरदायी अध्ययन: रोमियो 8: 1-9

- 1 सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं: क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं।
- 2 क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया।
- 3 क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उस को परमेश्वर ने किया, अर्थात् अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में, और पाप के बलिदान होने के लिये भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी।
- 4 इसलिये कि व्यवस्था की विधि हम में जो शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए।
- 5 क्योंकि शारीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन लगाते हैं; परन्तु आध्यात्मिक आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं।
- 6 शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है।
- 7 क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन है, और न हो सकता है।
- 8 और जो शारीरिक दशा में है, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते।
- 9 परन्तु जब कि परमेश्वर का आत्मा तुम में बसता है, तो तुम शारीरिक दशा में नहीं, परन्तु आत्मिक दशा में हो। यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं।

पाठ उपदेश

---

## बाइबल

### 1. उत्पत्ति 1: 1, 31 (से 1st.)

- <sup>1</sup> आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।  
<sup>31</sup> तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है।

### 2. उत्पत्ति 2 : 6, 9, 15-17

- <sup>6</sup> तौभी कोहरा पृथ्वी से उठता था जिस से सारी भूमि सिंच जाती थी  
<sup>9</sup> और यहोवा परमेश्वर ने भूमि से सब भांति के वृक्ष, जो देखने में मनोहर और जिनके फल खाने में अच्छे हैं उगाए, और वाटिका के बीच में जीवन के वृक्ष को और भले या बुरे के ज्ञान के वृक्ष को भी लगाया।  
<sup>15</sup> तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को ले कर अदन की वाटिका में रख दिया, कि वह उस में काम करे और उसकी रक्षा करे,  
<sup>16</sup> तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी, कि तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है:  
<sup>17</sup> पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा ॥

### 3. उत्पत्ति 3 : 1-6, 13, 17

- <sup>1</sup> यहोवा परमेश्वर ने जितने बनैले पशु बनाए थे, उन सब में सर्प धूर्त था, और उसने स्त्री से कहा, क्या सच है, कि परमेश्वर ने कहा, कि तुम इस बाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना?  
<sup>2</sup> स्त्री ने सर्प से कहा, इस बाटिका के वृक्षों के फल हम खा सकते हैं।  
<sup>3</sup> पर जो वृक्ष बाटिका के बीच में है, उसके फल के विषय में परमेश्वर ने कहा है कि न तो तुम उसको खाना और न उसको छूना, नहीं तो मर जाओगे।  
<sup>4</sup> तब सर्प ने स्त्री से कहा, तुम निश्चय न मरोगे,  
<sup>5</sup> वरन परमेश्वर आप जानता है, कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आंखें खुल जाएंगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे।  
<sup>6</sup> सो जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिये चाहने योग्य भी है, तब उसने उस में से तोड़कर खाया; और अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया।  
<sup>13</sup> तब यहोवा परमेश्वर ने स्त्री से कहा, तू ने यह क्या किया है? स्त्री ने कहा, सर्प ने मुझे बहका दिया तब मैं ने खाया।

- 17 और आदम से उसने कहा, तू ने जो अपनी पत्नी की बात सुनी, और जिस वृक्ष के फल के विषय मैं ने तुझे आज्ञा दी थी कि तू उसे न खाना उसको तू ने खाया है, इसलिये भूमि तेरे कारण शापित है: तू उसकी उपज जीवन भर दुःख के साथ खाया करेगा:

#### 4. मरकुस 8 : 27 (से 1st ,)

- 27 और जीसस वहां से चले गए,

#### 5. मरकुस 9: 14-29

- 14 और जब वह चेलों के पास आया, तो देखा कि उन के चारों ओर बड़ी भीड़ लगी है और शास्त्री उन के साथ विवाद कर रहे हैं ।
- 15 और उसे देखते ही सब बहुत ही आश्चर्य करने लगे, और उस की ओर दौड़कर उसे नमस्कार किया ।
- 16 उस ने उन से पूछा; तुम इन से क्या विवाद कर रहे हो?
- 17 भीड़ में से एक ने उसे उत्तर दिया, कि हे गुरु, मैं अपने पुत्र को, जिस में गूंगी आत्मा समाई है, तेरे पास लाया था ।
- 18 जहां कहीं वह उसे पकड़ती है, वहीं पटक देती है: और वह मुंह में फेन भर लाता, और दांत पीसता, और सूखता जाता है: और मैं ने चेलों से कहा कि वे उसे निकाल दें परन्तु वह निकाल न सके ।
- 19 यह सुनकर उस ने उन से उत्तर देके कहा: कि हे अविश्वासी लोगों, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा और कब तक तुम्हारी सहंगा? उसे मेरे पास लाओ ।
- 20 तब वे उसे उसके पास ले आए: और जब उस ने उसे देखा, तो उस आत्मा ने तुरन्त उसे मरोड़ा; और वह भूमि पर गिरा, और मुंह से फेन बहाते हुए लोटने लगा ।
- 21 उस ने उसके पिता से पूछा; इस की यह दशा कब से है?
- 22 उस ने कहा, बचपन से: उस ने इसे नाश करने के लिये कभी आग और कभी पानी में गिराया; परन्तु यदि तू कुछ कर सके, तो हम पर तरस खाकर हमारा उपकार कर ।
- 23 यीशु ने उस से कहा; यदि तू कर सकता है; यह क्या बता है विश्वास करने वाले के लिये सब कुछ हो सकता है ।
- 24 बालक के पिता ने तुरन्त गिड़गड़ाकर कहा; हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूं, मेरे अविश्वास का उपाय कर ।
- 25 जब यीशु ने देखा, कि लोग दौड़कर भीड़ लगा रहे हैं, तो उस ने अशुद्ध आत्मा को यह कहकर डांटा, कि हे गूंगी और बहिरी आत्मा, मैं तुझे आज्ञा देता हूं, उस में से निकल आ, और उस में फिर कभी प्रवेश न कर ।
- 26 तब वह चिल्लाकर, और उसे बहुत मरोड़ कर, निकल आई; और बालक मरा हुआ सा हो गया, यहां तक कि बहुत लोग कहने लगे, कि वह मर गया ।
- 27 परन्तु यीशु ने उसका हाथ पकड़ के उसे उठाया, और वह खड़ा हो गया ।
- 28 जब वह घर में आया, तो उसके चेलों ने एकान्त में उस से पूछा, हम उसे क्यों न निकाल सके?

29 उस ने उन से कहा, कि यह जाति बिना प्रार्थना किसी और उपाय से निकल नहीं सकती॥

## 6. यूहन्ना 14: 10 (शब्द)-12

10 ....ये बातें जो मैं तुम से कहता हूँ, अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है।  
11 मेरी ही प्रतीति करो, कि मैं पिता में हूँ; और पिता मुझ में है; नहीं तो कामों ही के कारण मेरी प्रतीति करो।  
12 मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूँ वह भी करेगा, वरन इन से भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ।

## 7. यूहन्ना 15: 11

11 मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कही हैं, कि मेरा आनन्द तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।

## विज्ञान और स्वास्थ्य

### 1. 526: 15-17

परमेश्वर ने अपने द्वारा बनाए गए सब का अच्छा उच्चारण किया, और शास्त्रों ने घोषणा की कि उसने सब बनाया

### 2. 71 : 1-4

कुछ भी वास्तविक और शाश्वत नहीं है, — कुछ भी आत्मा नहीं है, - भगवान और उनके विचार को छोड़कर। बुराई की कोई वास्तविकता नहीं है। यह न तो व्यक्ति, स्थान, न ही चीज है, लेकिन केवल एक विश्वास है, भौतिक अर्थ का भ्रम है।

### 3. 228: 25-29 (से 2nd.)

ईश्वर से अलग कोई शक्ति नहीं है। सर्वव्यापी के पास सर्व-शक्ति है, और किसी अन्य शक्ति को स्वीकार करने के लिए भगवान को बेइज्जत करना है विनम्र नाज़रीन ने इस पाप को दूर कर दिया कि पाप, बीमारी और मृत्यु में शक्ति है। उन्होंने उन्हें शक्तिहीन साबित कर दिया।

### 4. 538 : 13-22

"जीवन का वृक्ष" शाश्वत वास्तविकता या अस्तित्व का महत्वपूर्ण है। "ज्ञान का वृक्ष" अवास्तविकता को बढ़ाता है। सर्प की गवाही तरुटि के भ्रम से महत्वपूर्ण है, झूठे दावों की जो ईश्वर को गलत बताते हैं उत्पत्ति के एलोहिस्टिक परिचय में पाप, बीमारी और मृत्यु का कोई रिकॉर्ड नहीं है, जिसमें ईश्वर आकाश, पृथ्वी और मनुष्य का निर्माण करता है। जब तक अखाड़े में प्रवेश करने का सच सामने नहीं आता, तब तक बुराई का कोई इतिहास नहीं है, और बुराई को केवल वास्तविक और शाश्वत के विपरीत विरोधाभासी के रूप में देखा जाता है।

## 8. 567 : 18-23

वह झूठा दावा - वह प्राचीन मान्यता, वह पुरानी नागिन जिसका नाम शैतान (बुराई) है, यह दावा करते हुए कि पुरुषों को लाभ पहुंचाने या उन्हें घायल करने के लिए या तो बुद्धि में है - शुद्ध भ्रम है, लाल इरैगन; और यह क्राइस्ट, सत्य, आध्यात्मिक विचार द्वारा डाली गई है, और इसलिए शक्तिहीन साबित हुई है।

## 6. 492 : 22-28

यह धारणा कि मन और पदार्थ पाप, बीमारी और मृत्यु के रूप में मानव भ्रम में आते हैं, अंततः विज्ञान के मन को प्रस्तुत करना चाहिए, जो इस धारणा को नकारता है। ईश्वर मन है, और ईश्वर अनंत है; इसलिए सब मन है। इस कथन पर विज्ञान के होने का पता लगाया जाता है, और इस विज्ञान का सिद्धांत सद्भाव और अमरता का प्रदर्शन करता है।

## 7. 385: 31-15

कोई भी सूचना, शरीर से या जड़ पदार्थ से आ रही है जैसे कि या तो बुद्धिमान थे, नश्वर मन का भ्रम है, - इसका एक सपना है। एहसास है कि इंद्रियों के प्रमाण को बीमारी के मामले में स्वीकार नहीं करना है, पाप के मामले में किसी भी अधिक से अधिक है।

कुछ निश्चित तापमानों के लिए शरीर का पर्दाफाश करें, और विश्वास कहता है कि आप ठंड को पकड़ सकते हैं और भयावह हो सकते हैं; लेकिन ऐसा कोई नतीजा नहीं निकलता है, जो इसे मांगे और इसका उत्पादन करे। इतनी देर तक कि नश्वर लोग घोषणा करते हैं कि वायुमंडल के कुछ राज्य भयावहता, बुखार, गठिया, या खपत का उत्पादन करते हैं, उन प्रभावों का पालन करेंगे, - जलवायु के कारण नहीं, लेकिन विश्वास के कारण। लेखक के पास कई उदाहरणों में बीमारी को ठीक किया गया है, नश्वर लोगों के दिमाग पर सत्य की कार्रवाई के माध्यम से, और शरीर पर सत्य के संगत प्रभाव, यह जानने के लिए नहीं कि ऐसा है।

## 8. 230: 1-10

यदि बीमारी वास्तविक है, तो यह अमरता से संबंधित है; अगर यह सच है, यह सत्य का एक हिस्सा है। क्या आप सत्य की गुणवत्ता या स्थिति को नष्ट करने के लिए दवाओं के साथ या बिना प्रयास करेंगे? लेकिन अगर बीमारी और पाप भ्रम हैं, तो इस नश्वर सपने से जागृति, या भ्रम, हमें स्वास्थ्य, पवित्रता और अमरता में लाएगा। यह जागृति हमेशा के लिए मसीह के आने की है, सत्य का उन्नत रूप है, जो त्रुटि को बाहर निकालता है और बीमारों को ठीक करता है। यह वह मोक्ष है जो ईश्वर, ईश्वरीय सिद्धांत और प्रेम के माध्यम से आता है, जैसा कि यीशु द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

## 9. 427: 13-14, 29-3

मृत्यु, लेकिन सपने का एक और चरण है कि अस्तित्व भौतिक हो सकता है।

मृत्यु का सपना यहाँ या उसके बाद मन से महारत हासिल करना चाहिए। सत्य के इस तुरही-शब्द को पकड़ने के लिए, अपनी स्वयं की सामग्री घोषणा से, "मैं मर गया हूँ" जाग जाएगा "कोई मृत्यु नहीं है, कोई निष्क्रियता नहीं है, रोगग्रस्त किरिया, अतिशयोक्ति और न ही प्रतिकिरिया।"

जीवन वास्तविक है, और मृत्यु भ्रम है।

## 10. 428: 6-14

इस सर्वोच्च क्षण में मनुष्य का विशेषाधिकार हमारे मास्टर के शब्दों को साबित करना है: "कि यदि कोई व्यक्ति मेरे वचन पर चलेगा, तो वह अनन्त काल तक मृत्यु को न देखेगा।" झूठे न्यासों और भौतिक साक्ष्यों के बारे में विचार करने के लिए ताकि आध्यात्मिक तथ्य सामने आ सकें — यह महान प्राप्ति है जिसके माध्यम से हम असत्य को मिटा देंगे और सत्य को स्थान देंगे। इस प्रकार हम मंदिर, या देह को सच में स्थापित कर सकते हैं, "जिसका निर्माता और निर्माता भगवान है।"

## 11. 570: 26-29

जब परमेश्वर बीमारों या पापों को चंगा करता है, तो उन्हें उस महान लाभ को जानना चाहिए जो कि माइंड ने गढ़ा है। उन्हें नश्वर मन के महान भ्रम को भी जानना चाहिए, जब यह उन्हें बीमार या पापी बनाता है।

## 12. 572: 12-17

प्रेम किरिचियन साइंस के कानून को पूरा करता है, और इस दिव्य सिद्धांत की कुछ भी कमी, समझा और प्रदर्शित नहीं किया जा सकता है, कभी भी सर्वनाश की दृष्टि प्रस्तुत कर सकता है, सत्य के साथ त्रुटि के सात मुहरों को खोल सकता है, या पाप, बीमारी और मृत्यु के असंख्य भ्रमों को उजागर कर सकता है।।

## 13. 242: 9-20

---

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड किरिचियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिपचरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एडडी ने किरिचियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

दिव्य विज्ञान में स्वर्ग, सद्भाव और मसीह के लिए एक रास्ता है, हमें इस तरह से दिखाता है। यह कोई और वास्तविकता नहीं है - जीवन की कोई अन्य चेतना नहीं है - अच्छा, ईश्वर और उसका प्रतिबिंब, और इंदिरियों के तथाकथित दर्द और आनंद से बेहतर उठना

स्व-प्रेम एक ठोस शरीर की तुलना में अधिक अपारदर्शी है। एक रोगी ईश्वर की आज्ञाकारिता में, प्रेम के सार्वभौमिक विलायक के साथ भंग करने के लिए हमें शर्म करना चाहिए, - आत्म-इच्छा, आत्म-औचित्य, और आत्म-प्रेम, - जो आध्यात्मिकता के खिलाफ युद्ध करता है और पाप का कानून मौत।

#### 14. 227: 21-29

किरिश्चियन साइंस स्वतंत्रता और रोने के मानक को बढ़ाता है: "मेरे पीछे आओ! बीमारी, पाप, और मृत्यु के बंधन से बचो!" यीशु ने रास्ता चिह्नित किया। दुनिया के नागरिक, "परमेश्वर के बच्चों की शानदार स्वतंत्रता" स्वीकार करें और मुक्त रहें! यह तुम्हारा दिव्य अधिकार है। भौतिक बोध का भ्रम, ईश्वरीय विधान नहीं, आपको बाध्य करता है, आपके मुक्त अंगों को उलझाता है, आपकी क्षमताओं को अपंग करता है, आपके शरीर को ऊर्जावान करता है, और आपके होने के टैबलेट को खराब कर देता है।

#### 15. 390: 20-26

विचार पर बढ़ने के लिए पाप या बीमारी का कोई दावा नहीं है। इसे एक घृणित दृढ़ विश्वास के साथ खारिज कर दें कि यह नाजायज है, क्योंकि आप जानते हैं कि ईश्वर पाप से अधिक बीमारी का लेखक नहीं है। आपके पास पाप या बीमारी की आवश्यकता का समर्थन करने के लिए उसका कोई कानून नहीं है, लेकिन आपके पास उस आवश्यकता को नकारने और बीमार को ठीक करने के लिए दिव्य अधिकार है।

## दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

## दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी

मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

## उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक किरिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वेषी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

## कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6